विवेकी व्यक्ति

सुकरात का जीवन और दर्शन

"जैसा कि सभी के भाग्य में होता है, मैंने भी जीवन में महान दुःख और क्लेश झेले हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि एक दार्शनिक के रूप में बिताया मेरा कोई भी समय अप्रसन्न बीता हो। मैंने कड़ा परिश्रम किया है, और अक्सर जटिल समस्याओं पर गहराई से चिंतन किया है। लेकिन नये प्रश्नों को खोज निकालने, और उनका हल ढूंढने की जद्दोजहद में कुछ प्रगति पर पाने पर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता मिलती है। कम से कम मुझे तो लगता है कि इसी में जीवन की सार्थकता है।"

कार्ल पॉपर (१९०२-१९९४) "अधूरी खोज"

"मैं केवल इतना जानता हूँ कि मैं कुछ भी नहीं जानता!"

दो हज़ार से भी अधिक वर्ष पहले इस प्रतिष्ठित वाक्य को बोल कर सुकरात ने पाश्चात्य दर्शन के भविष्य के लिए एक मानक स्थापित कर दिया। दिन के समय सुकरात एथेंस के बाज़ारों में धूप सेंकता फिरता, और घंटों चर्चा करता कि बुद्धिमत्ता, सही-गलत, साहस, न्याय, प्रेम, इन शब्दों का सही अर्थ आखिर क्या है। रात के समय वह अपने दोस्तों के साथ नाचता-खेलता और दावतें करता। उसके व्यक्तित्व में एक आकर्षण था, हालाँकि वह देखने में बहुत आकर्षक नहीं था। वह धनवान नहीं था, लेकिन सुखी था।

सुकरात हर प्रकार से एक पेचीदा और विवादस्पद व्यक्ति था। यह भला कैसे संभव है कि जो व्यक्ति यह दावा करता था कि उसे कुछ नहीं पता, उसे अपने समय का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति माना जाने लगा। उसकी कार्य-पद्धति, यानि लोगों से इस संसार के बारे में मुश्किल और पेचीदा सवाल पूछना, हर किसी को जंचती नहीं थी। अंततोगत्वा, एथेंस के लोगों ने सुकरात को दण्डित किया, क्योंकि उनकी दृष्टि में वह नौजवानों को गुमराह कर रहा था, और देवताओं का निरादर कर रहा था। विरले ही ऐसे होते हैं जो प्रचलित मान्यताओं पर प्रश्न-चिह्न लगाएं, और लोगों की सोच को गंभीर रूप से प्रभावित करें। बेशक, संसार भर के विचारक आज भी सुकरात के जीवन और उसके दर्शन से प्रेरणा लेते हैं।

इस पुस्तक में जैसे-जैसे सुकरात के जीवन और कार्यों की कहानी जीवंत उदाहरणों के द्वारा प्रस्तुत की जाती है, मानो सुकरात पुस्तक के पन्नो से निकल कर हमारी आँखों से समक्ष आ खड़े होते हैं। यह कहानी दो स्तरों पर वर्णित की गई है, पहले स्तर पर एकदम सीधी-सादी, लेकिन दूसरे में उसके जीवन और समय की रसयुक्त और रोचक अतिरिक्त जानकारी का विवरण दिया गया है।

विवेकी व्यक्ति

सुकरात का जीवन और दर्शन

लेखक: एम् डी अशर

चित्रसज्जा : विलियम ब्रामहाल

बहुत समय पहले प्राचीन यूनान में सुकरात नाम के एक किशोर ने घोषणा कर दी कि उसे कुछ भी नहीं पता है। और फिर वह सारा जीवन प्रश्न ही पूछता रहा।

वह बहुत ही जिज्ञासु लड़का था, और थोड़ा गुस्ताख़ भी। लेकिन संसार में सबसे अधिक यदि वह कुछ चाहता था, तो सुखी होना, अच्छा बनना, और बुद्धिमान व विवेकशील बनना।

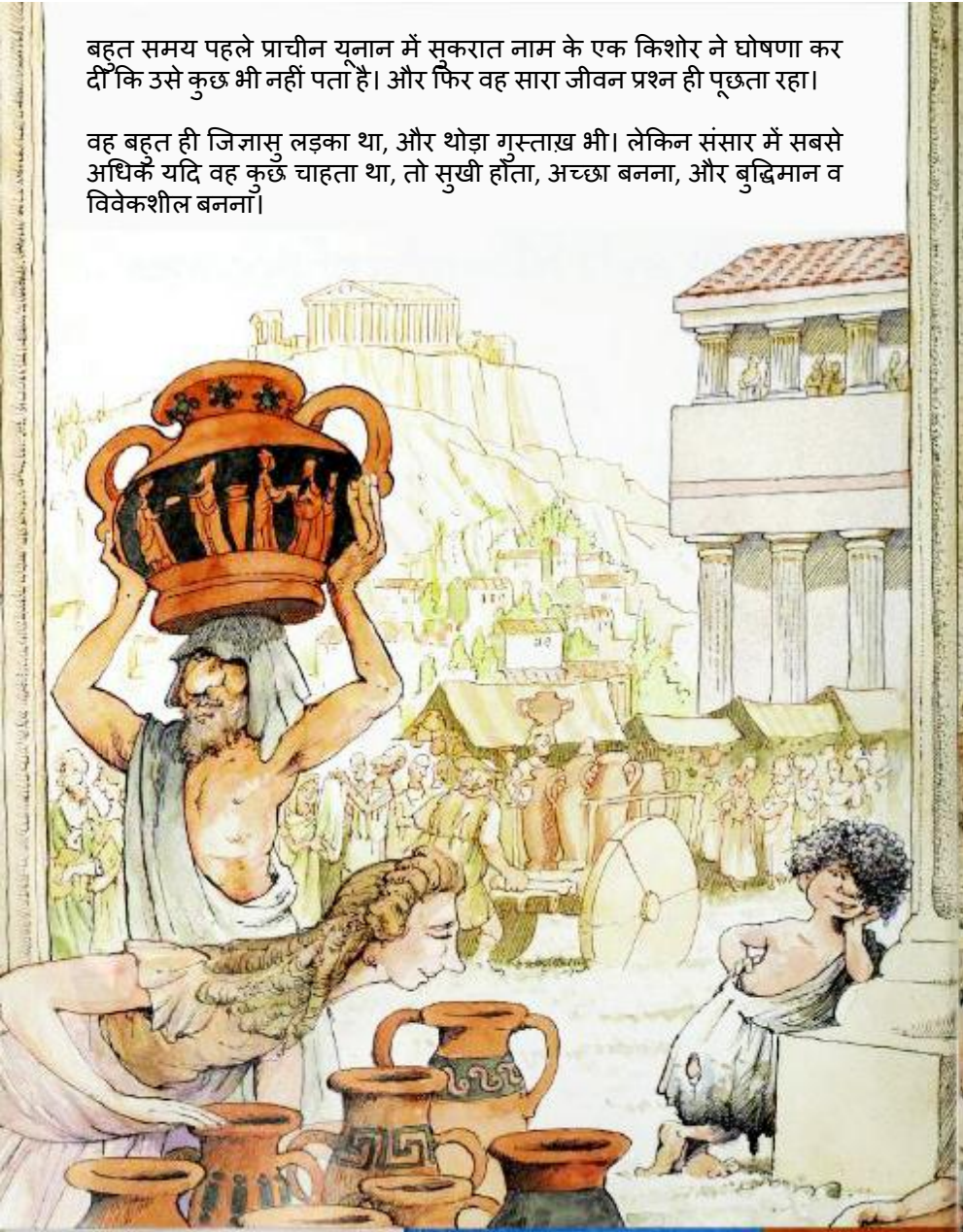

सुकरात का जीवन काल एथेंस के नगर-राज्य में ईसापूर्व ४६९ से ईसापूर्व ३९९ तक गुज़रा। उसने सारा जीवन ऐसे प्रश्न पूछने में गुज़ारा जो एकदम विलक्षण और हैरान करने वाले होते थे। जैसे उदाहरण के लिए, उसका सबसे प्रसिद्ध कथन, "मैं जनता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता।" यदि इस बारे में सोचो तो यह कथन पूरी तरह सत्य नहीं हो सकता। जो कोई भी ऐसा कहता है, वह कम से कम इतना तो जानता ही है, कि वह कुछ नहीं जानता। इसके अलावा, इतना तो प्रत्यक्ष ही है कि वह व्यक्ति और भी बहुत सी बातें जानता है, जैसे चलना, बोलना, खाना इत्यादि। उसका तात्पर्य यह था कि किसी भी विषय की बहुत करीबी से जाँच किये बिना आपको यह धारणा नहीं बनानी चाहिए कि आप उस विषय के बारे में सबकुछ जानते हैं। उसका मानना था कि सारे उत्तरों की जानकारी रखने की अपेक्षा नए और उचित प्रश्न पूछना कहीं अधिक महत्वपूर्ण और रोचक था, क्योंकि ऐसा करने से ही, धीरे-धीरे, विभिन्न विषयों के बारे में हमारी जानकारी और समझ बढ़ेगी। और यह समझ ही विवेक और बुद्धिमत्ता की शुरुआत है। एक ऐसी दुनियाँ में जहाँ हर कोई अपने को सर्ववेत्ता समझता हो, सुकरात के लिए अपने अज्ञानी होने की घोषणा करना वास्तव में बहुत साहसी कदम था। वास्तव में जिन विषयों की वह खोज कर रहा था, उसने कभी भी उन विषयों का पूर्ण-ज्ञानी होने का दम्भ नहीं भरा। और यद्यपि उसके बहुत से अनुयायी और शिष्य थे, उसने कभी अपने आप को उनका शिक्षक नहीं माना।

प्रतिदिन वह साइमन नाम के अपने एक मित्र से मिलने जाता था, जो कि एक मोची था। जब साइमन अपना काम कर रहा होता, तो सुकरात बैठ कर उसका अध्ययन करता था। साइमन चमड़े को टुकड़ों में काटता, और फिर उन टुकड़ों को सावधानी से सी कर जूते बनाता। वह एक उत्कृष्ट मोची था।

"हूँ, तो क्या जूते बनाना भी एक प्रकार की बुद्धिमत्ता है?", सुकरात मन ही मन सोचता।

कहा जाता है कि मोची साइमन ही वह पहला व्यक्ति था जिसने सुकरात के साथ हुए अपने वार्तालापों का लेखा-जोखा रखा। सुकरात के इसी प्रकार के वार्तालाप अन्य लोगों के साथ भी हुए, जिन्होंने इनको लिख लिया, और इनको "सुकरात वार्तालापों" का नाम दिया गया। सुकरात ने स्वयं कभी कुछ नहीं लिखा। सुकरात के एक प्रसिद्ध अनुयायी प्लेटो (४२९ से ३४७ ईसापूर्व) ने इन वार्तालापों को लिखने की कला में महारत हासिल कर ली, और उसके लिखे हुए ये वार्तालाप विश्व साहित्य की उत्कृष्ट कृतियाँ बन गए, जिनका अध्ययन पिछले दो हज़ार वर्षों से विश्व के अनेक लोगों द्वारा किया गया है।

सुकरात साइमन जैसे कामगार लोगों से खूब घुल-मिल जाता था। वह खुद भी एक पत्थरों की चिनाई करने वाले कारीगर का बेटा था, और शायद उसने खुद भी बचपन में यह काम किया होगा। विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करते समय सुकरात अक्सर ही कामगारों और मज़दूरों से सम्बंधित उदाहरण दिया करता था। यह बात उसके कुछ दोस्तों व अन्य नागरिकों को अच्छी नहीं लगती थी। कॉलिक्लीज़ नाम के एक धनवान राजनेता ने एक बार शिकायत की, "हे भगवान, सुकरात तुम तो अपनी बातों में मोचियों, धोबियों, और रसोइयों का ज़िक्र किये ही चले जाते हो, भले ही उनका मुख्य विषय से कुछ लेना देना हो या न हो।" लेकिन सुकरात को पूरा विश्वास था कि उसकी बातों से इन लोगों का पूरा सम्बन्ध था। उसका मानना था कि बुद्धिमत्ता भी एक कला है, ठीक वैसे ही जैसे जूते बनाना। यदि आपको इसमें प्रवीण होना है, तो अभ्यास तो करना ही होगा।

वह अपने शहर के एक बढ़ई को भी लकड़ी से फर्नीचर बनाते देखता था। पहले उस बढ़ई ने एक पलंग बनाया, और फिर एक मेज़, दोनों ही बहुत खूबसूरती से तराशे हुए।

"हूँ ", सुकरात ने सोचा। "यदि दोनों ही लकड़ी के बने हैं, और दोनों में चार टाँगें हैं, तो एक पलंग और दूसरी मेज़ क्यों कहलाती है? और वह क्या है जो एक बढ़ई को बढ़ई बनाता है?" सुकरात अपना सर खुजाता। "ज़रूर इसका विचारों से कुछ लेना देना है," उसने निष्कर्ष निकाला।

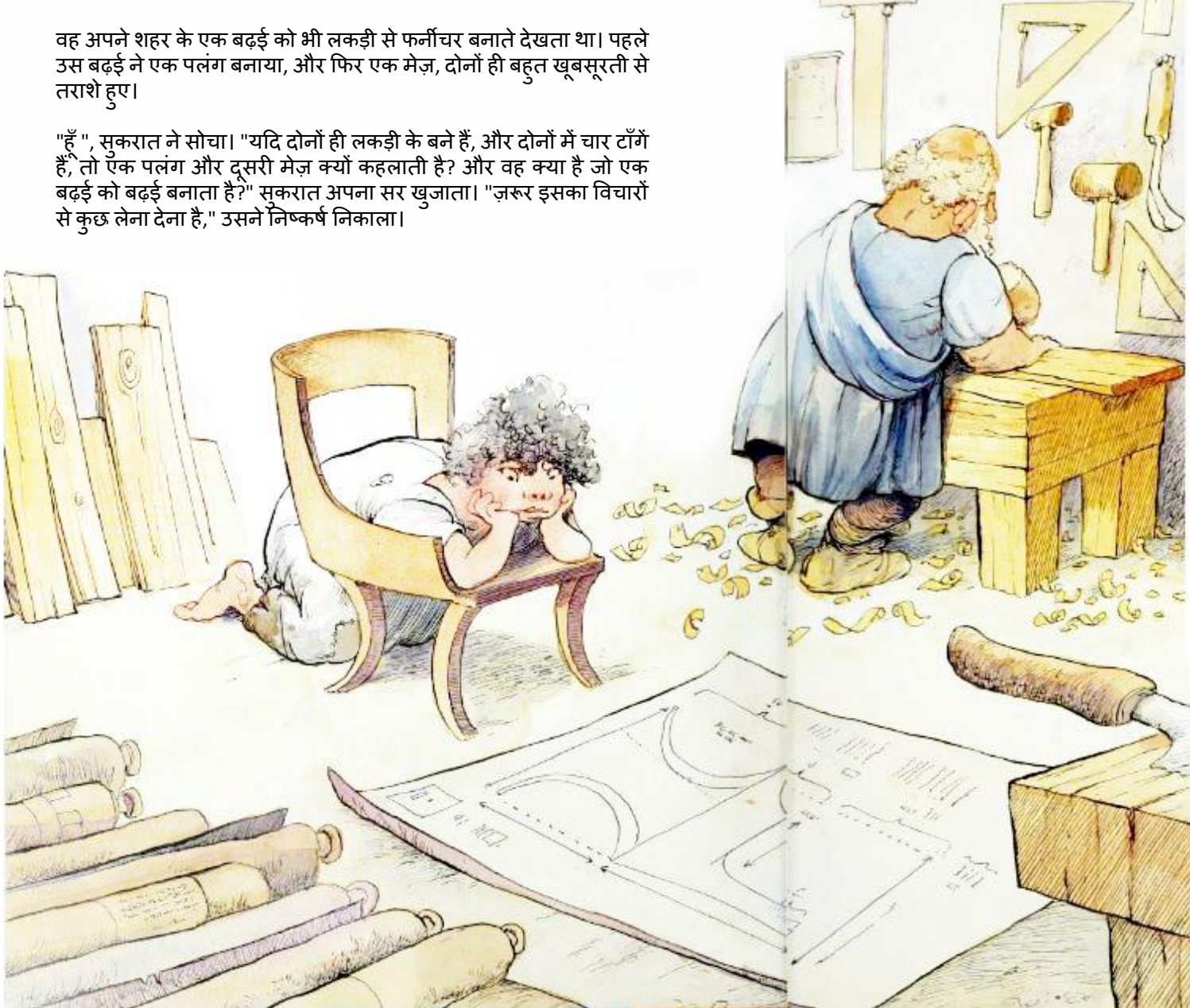

एक विचार आखिर है क्या? क्या यह कोई वस्तु है जिसे आप स्पर्श कर सकते हों, सूंघ सकते हों, या फिर उसका स्वाद ले सकते हों? अगर नहीं, तो क्या यह किसी पलंग और मेज़ से किसी भी तरह कम वास्तविक है? एक पलंग और उसकी परिकल्पना में आखिर अंतर क्या है? सुकरात का कहना था कि पलंग बनाने से पहले यह आवश्यक है कि बढ़ई के मस्तिष्क में पलंग की एक परिकल्पना या विचार जन्म ले। लेकिन ये विचार आखिर आते कहाँ से हैं? सुकरात का ऐसा मानना था कि हमारे आसपास की सभी वस्तुओं का सम्बन्ध एक अदृश्य और चिरस्थायी खाके से है, जिसके अनुसार वे बनती हैं। एक पलंग का चिरस्थायी खाका हमें शायद इतनी रोचक बात न लगे, लेकिन सुकरात ने यही बात बड़ी संकल्पनाओं पर भी लागू की, जैसे कि सही और गलत, अच्छा और बुरा। जिस प्रकार एक बढ़ई अपने सारे ज्ञान और अनुभव के द्वारा एक अच्छा पलंग बना कर एक अच्छा बढ़ई कहलाता है, उसी तरह कोई व्यक्ति जिसने अच्छाई और बुराई के खाके का अध्ययन किया है, एक अच्छा व्यक्ति बन सकता है।

वह विचारों के बारे में बहुत चिंतन करता था, और ज्ञान बढ़ाने के लिए सदा दूसरों से प्रश्न पूछता रहता था:
"जैसे तुम मेज़ या पलंग को देख सकते हो, विचारों को क्यों नहीं?"
"अच्छाई क्या है? साहस क्या है? न्याय क्या है? प्रेम क्या है?"

हालाँकि प्रतिष्ठित लोग बहुत दम्भ भरते थे कि वे बहुत बुद्धिमान हैं और उन्हें सारे उत्तर पता हैं, सुकरात ने पाया कि किसी को भी विचारों की वैसी समझ नहीं थी, जैसी साइमन को चमड़े की या बढ़ई को लकड़ी की थी।

"तुम सच में बुद्धिमान कैसे हो सकते हो, अगर तुम्हें इन बातों का ज्ञान नहीं है?", सुकरात पूछता।

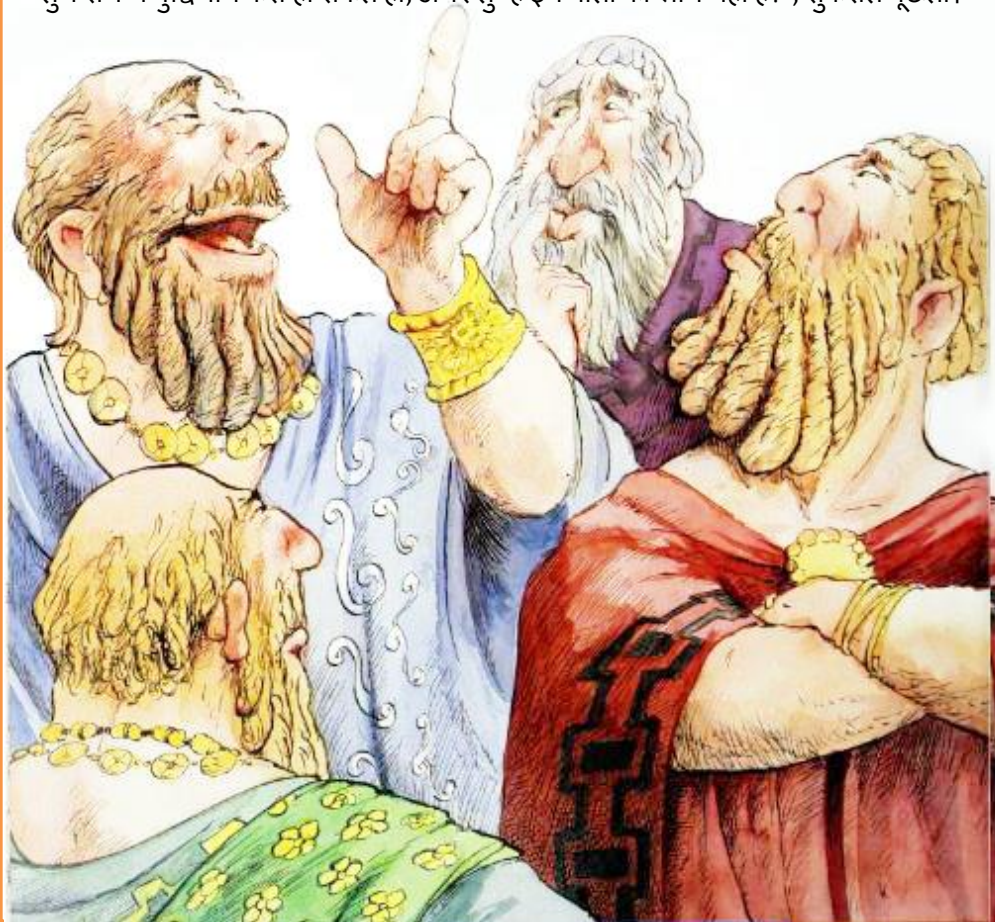

सुकरात ने एक बार कहा था कि उसके अनुभव के आधार पर, सर्वाधिक ख्याति वाले लोगों का ज्ञान सबसे थोड़ा होता है। उसे लगा कि इसका कारण यह था कि जो लोग दूसरों पर प्रभाव डालने और दूसरों के मन में अपने लिए अच्छी धारणा बनाने की अधिक चिंता करते है, वे स्वयं वास्तव में नहीं देख पाते कि वे खुद क्या हैं, और कैसे हैं। दूसरे शब्दों में, जो व्यक्ति स्वयं को अच्छा साबित करने का जितना अधिक प्रयास करता है, वह असल में उतना ही कम अच्छा होता जाता है।

क्योंकि उसका मानना था कि चीज़ें असल में वैसी होती नहीं है, जैसे वे दिखती हैं, सुकरात उन सीधे-सादे शब्दों पर भी प्रश्न उठाता था, जिन्हें हम यूँ ही स्वीकार कर लेते हैं, जैसे "अच्छाई", "साहस", "न्याय" या "प्रेम"। वह ऐसे शब्दों के पीछे की सभी झूठी धारणाओं को समाप्त करके उन्हें नए सिरे से एक नवीन और अधिक स्पष्ट परिभाषा देना चाहता था। उसने इस पद्धति को डायलेक्टिक (dialectic) का नाम दिया था, जिसका यूनानी भाषा में अर्थ है गहन तार्किक संवाद। सुकरात के अनुसार किसी भी दर्शन शास्त्र का सार इसी तार्किक संवाद में है।

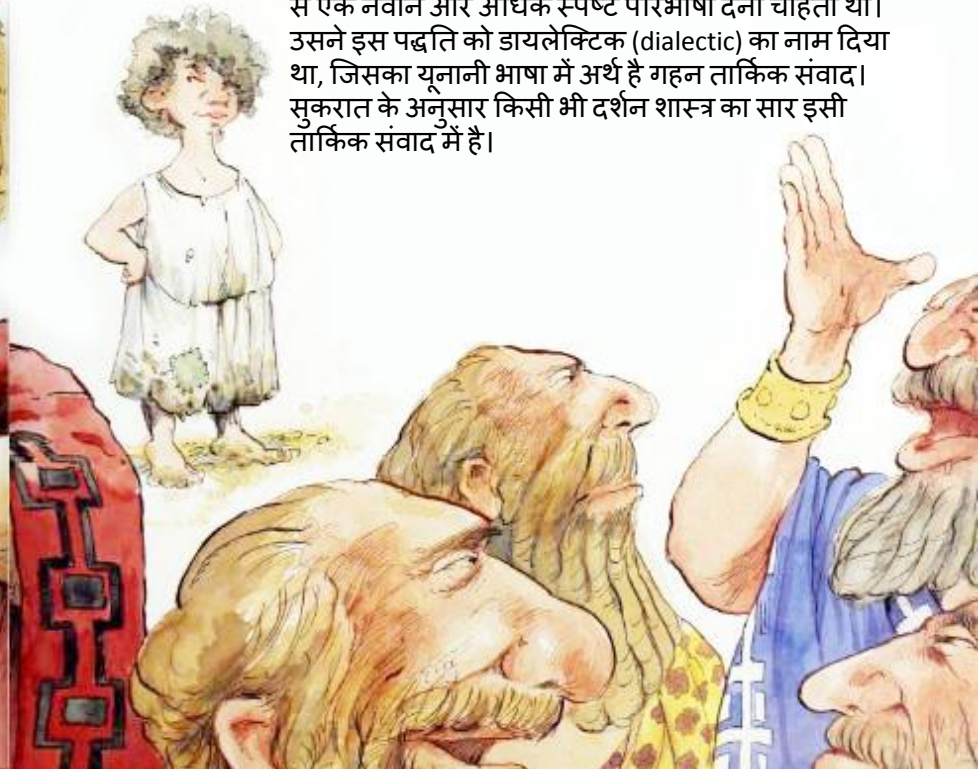

लोग सुकरात के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनते। वे घंटों बाहर धूप सेंकते बैठे रहते।

"हूँ.... " सुकरात ने आकाश को ओर देखकर कहा। "क्या तुम्हें लगता है कि अच्छाई सूर्य की तरह ही है, प्रकाश,जीवन और दर्शन का स्रोत?"

हम अपने जीवन और दृष्टि के लिए सूर्य पर निर्भर हैं। सुकरात का कहना है कि जिस प्रकार सूर्य के बिना जीवन असम्भव है, उसी तरह अच्छाई के बिना भी हम नहीं रह सकते। लेकिन सूर्य हर समय हर किसी के ऊपर प्रकाशित नहीं होता। उसी तरह लोग भी हर समय अच्छाई का अनुसरण नहीं करते।

सुकरात का शिष्य प्लेटो अज्ञानी लोगों की तुलना उन कैदियों से करता था जो अपना सारा जीवन एक गुफा में बिता देता हैं। वे अपनी बेड़ियों में बंधे गुफा की ऊंची दीवार पर पीठ टिकाये इस प्रकार बैठे रहते हैं कि अपने सर भी इधर उधर नहीं घुमा सकते। उनके पीछे गुफा के मुहाने पर लोग-बाग धूप में आ-जा रहे हैं, और उनकी धुंधली परछाइयां कैदियों के सामने की दीवार पर पड़ रही हैं। लेकिन क्योंकि उन्होंने खुली रौशनी में कभी कोई चीज़ देखी ही नहीं है, केवल परछाइयां ही देखी हैं, इसलिए उन्हें कोई अंदाज़ा ही नहीं है कि जो चीज़ें ये परछाइयां डाल रही हैं, वे दरअसल देखने में कैसी हैं। वे इन परछाइयों की अर्थपूर्णता के बारे में बहस करते हैं, और अपनी धारणाओं के प्रति इतनी दृढ़ता से आश्वस्त हैं कि यदि कोई गुफा में आकर उन्हें बताये भी कि वे जो देख रहे हैं वह केवल परछाइयां मात्र हैं, तो उनमें से अधिकांश उसकी बात का विश्वास ही नहीं करेंगे। वे गिने चुने लोग जो यह मानने के लिए तैयार हैं कि शायद वे गलत भी हो सकते हैं, गुफा की कैद से छूट सकते हैं। लेकिन उन्हें बहुत सावधानी से, और धीरे धीरे आगे बढ़ना होगा, जिससे उनकी आखें सूर्य के तेज़ प्रकाश की अभ्यस्त हो सकें। प्लेटो के लिए सुकरात उस व्यक्ति के समान था जो उन कैदियों को गुफा से आज़ाद करने की कोशिश कर रहा था, जो अपनी ही सोच के गुलाम बने हुए थे।

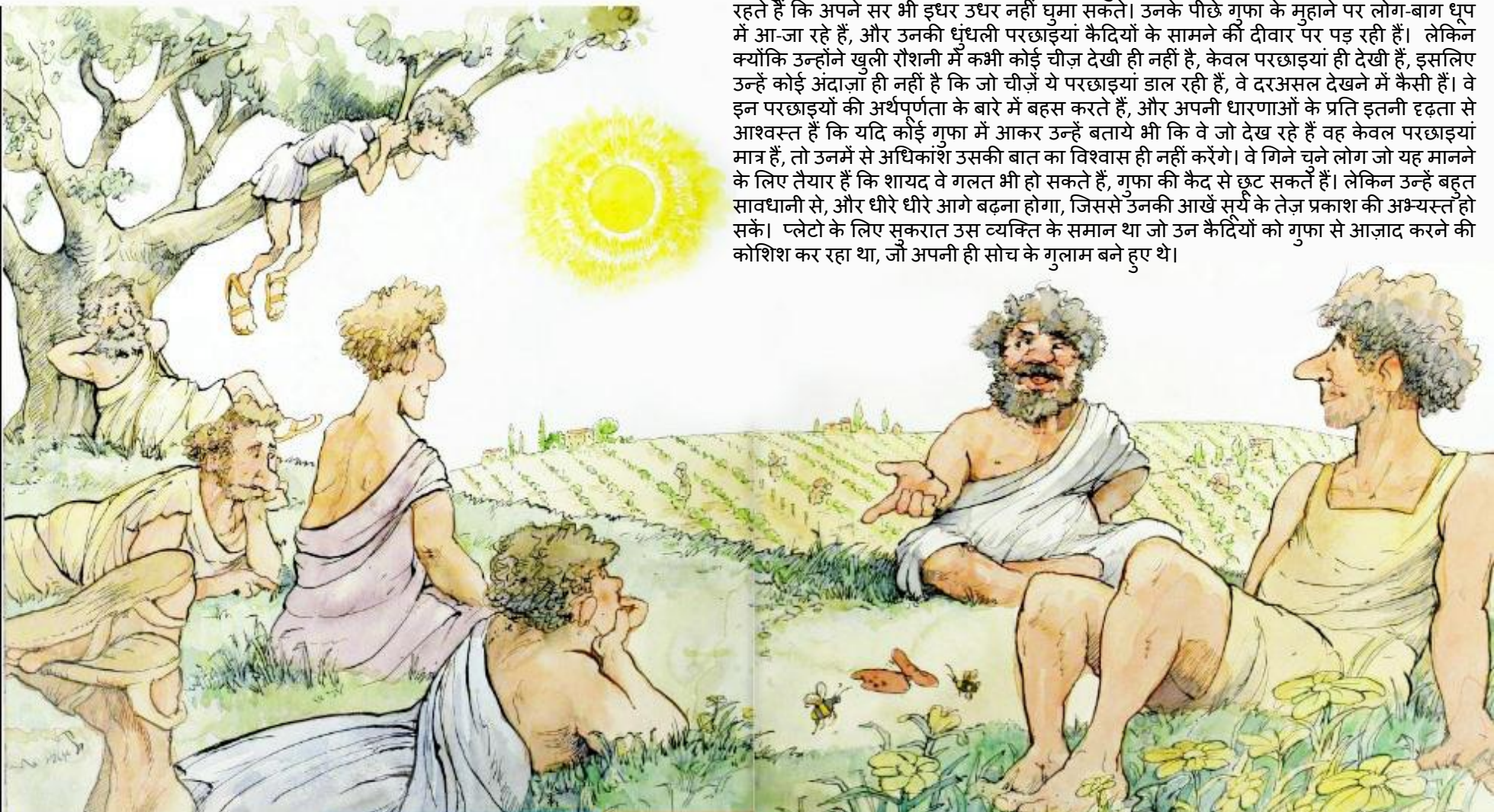

और सूरज डूबने के बाद, रात का समय सुकरात अपने दोस्तों के साथ बिताता था।
वे खाते-पीते, मौज-मस्ती करते और आपस में बातचीत करते।

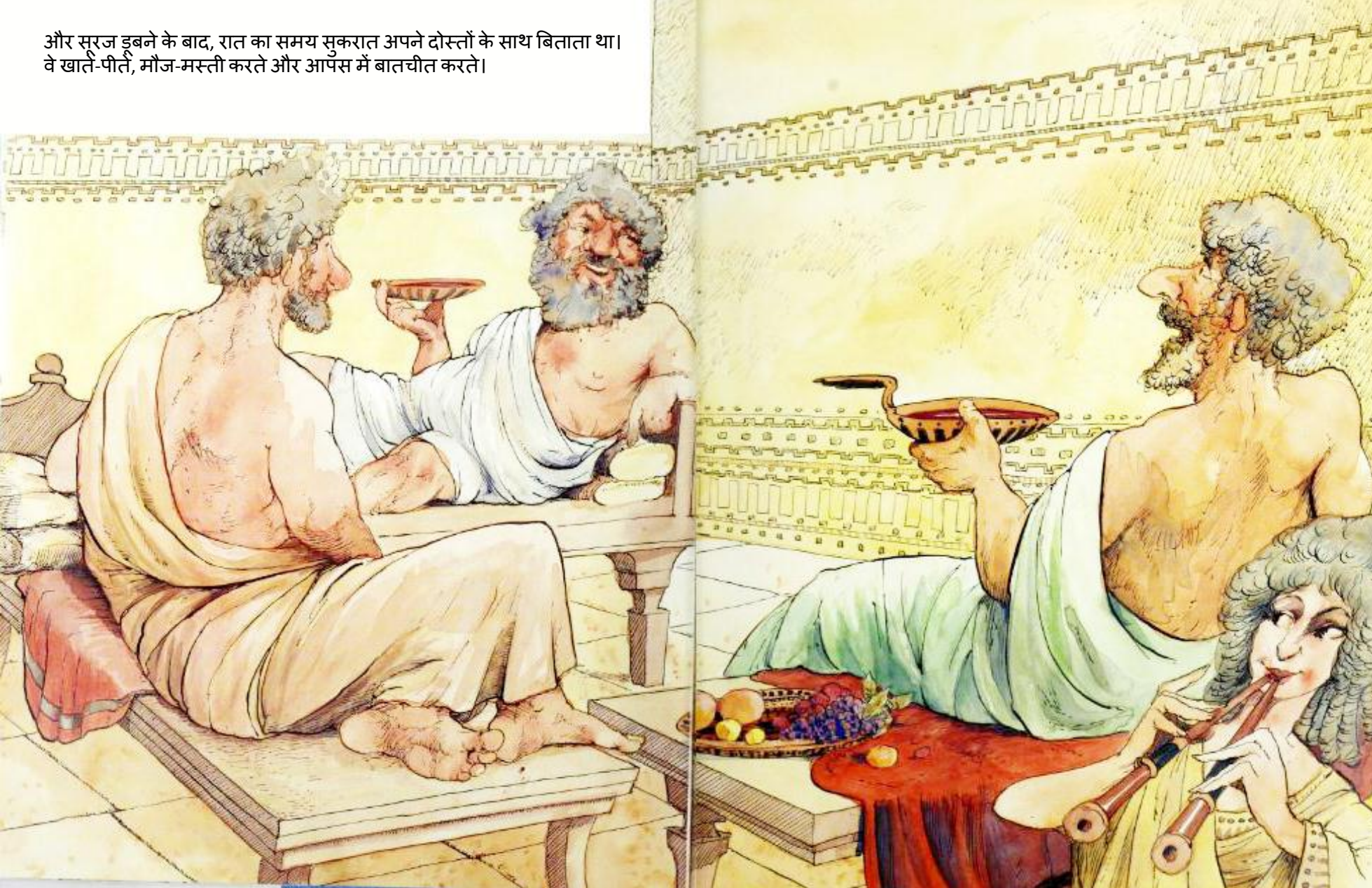

... और नाचते। सुकरात को नाचना बहुत पसंद था - अपनी बाँहों को लहराना और कूल्हों को मटकाना। "हमारा शरीर भी मन की ही तरह है," वह कहता, "इसे छरहरा, चुस्त-दुरुस्त और मज़बूत होना चाहिए।"

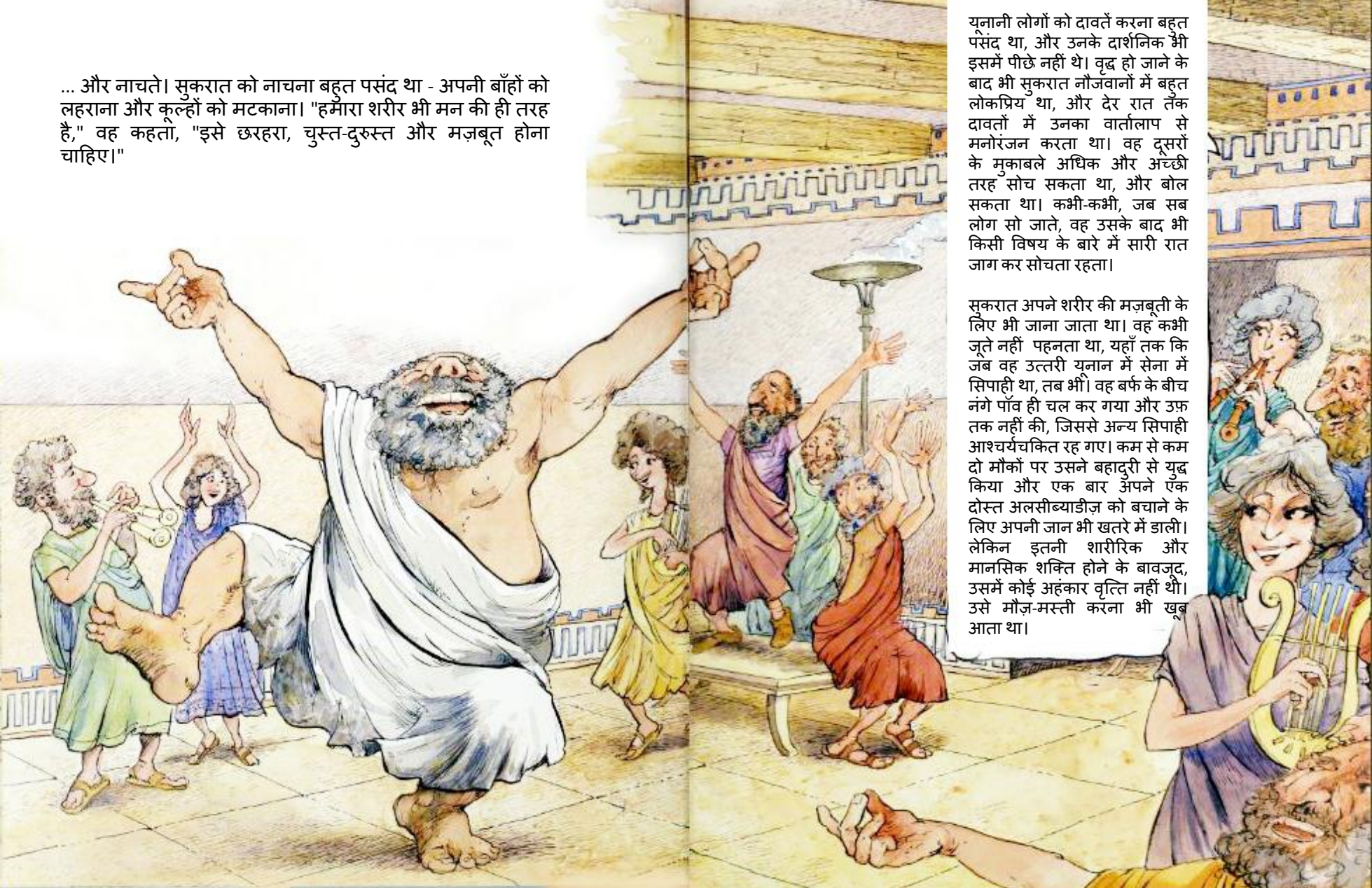

यूनानी लोगों को दावतें करना बहुत पसंद था, और उनके दार्शनिक भी इसमें पीछे नहीं थे। वृद्ध हो जाने के बाद भी सुकरात नौजवानों में बहुत लोकप्रिय था, और देर रात तक दावतों में उनका वार्तालाप से मनोरंजन करता था। वह दूसरों के मुकाबले अधिक और अच्छी तरह सोच सकता था, और बोल सकता था। कभी-कभी, जब सब लोग सो जाते, वह उसके बाद भी किसी विषय के बारे में सारी रात जाग कर सोचता रहता।

सुकरात अपने शरीर की मज़बूती के लिए भी जाना जाता था। वह कभी जूते नहीं पहनता था, यहाँ तक कि जब वह उत्तरी यूनान में सेना में सिपाही था, तब भी। वह बर्फ के बीच नंगे पॉव ही चल कर गया और उफ़ तक नहीं की, जिससे अन्य सिपाही आश्चर्यचकित रह गए। कम से कम दो मौकों पर उसने बहादुरी से युद्ध किया और एक बार अपने एक दोस्त अलसीब्याडीज़ को बचाने के लिए अपनी जान भी खतरे में डाली। लेकिन इतनी शारीरिक और मानसिक शक्ति होने के बावजूद, उसमें कोई अहंकार वृत्ति नहीं थी। उसे मौज़-मस्ती करना भी खूब आता था।

लेकिन उसकी शक्ल सूरत देखने में बिलकुल अच्छी नहीं थी। कुछ लोग उसके चेहरे-मोहरे का मज़ाक उड़ाते, और उसकी तुलना केकड़े, सूअर या गधे से करते।

लेकिन सुकरात उनके इस मज़ाक पर ध्यान नहीं देता था। वह केवल मुस्कुराता, और कहता, "इन मोटी मोटी आँखों से मैं अधिक अच्छा देख सकता हूँ, अपनी टेढ़ी नाक से अधिक अच्छा सूंघ सकता हूँ, और अपने गधे जैसे होठों से अधिक अच्छा चुम्बन ले सकता हूँ।"

यूनानी लोग बड़े सौंदर्य प्रेमी थे। वे सुडौल, सशक्त और नौजवान शरीर को बहुत महत्त्व देते थे, और सुकरात उनकी इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता था। सुकरात के एक बड़े निष्ठावान अनुयायी अल्सीबाडेस ने, जो कि बड़ा रूपवान और सुडौल शरीर वाला था, एक बार सुकरात की तुलना एक बकरी जैसे दिखने वाले पौराणिक प्राणी "सातिर" से की थी। लेकिन फिर भी, उसने स्वीकार किया था, कि सुकरात का सान्निध्य उसके लिए अत्यंत बहुमूल्य है। उसके अनुसार सुकरात के शब्द वैसे ही जादुई थे, जैसी कि यूनानी कथाओं में वर्णित मर्सिअस नाम के वाद्य बजाने वाले एक सातिर का संगीत था। यह सातिर बदसूरत होने के बावजूद अपने संगीत से सारे संसार को रिझा सकता था।

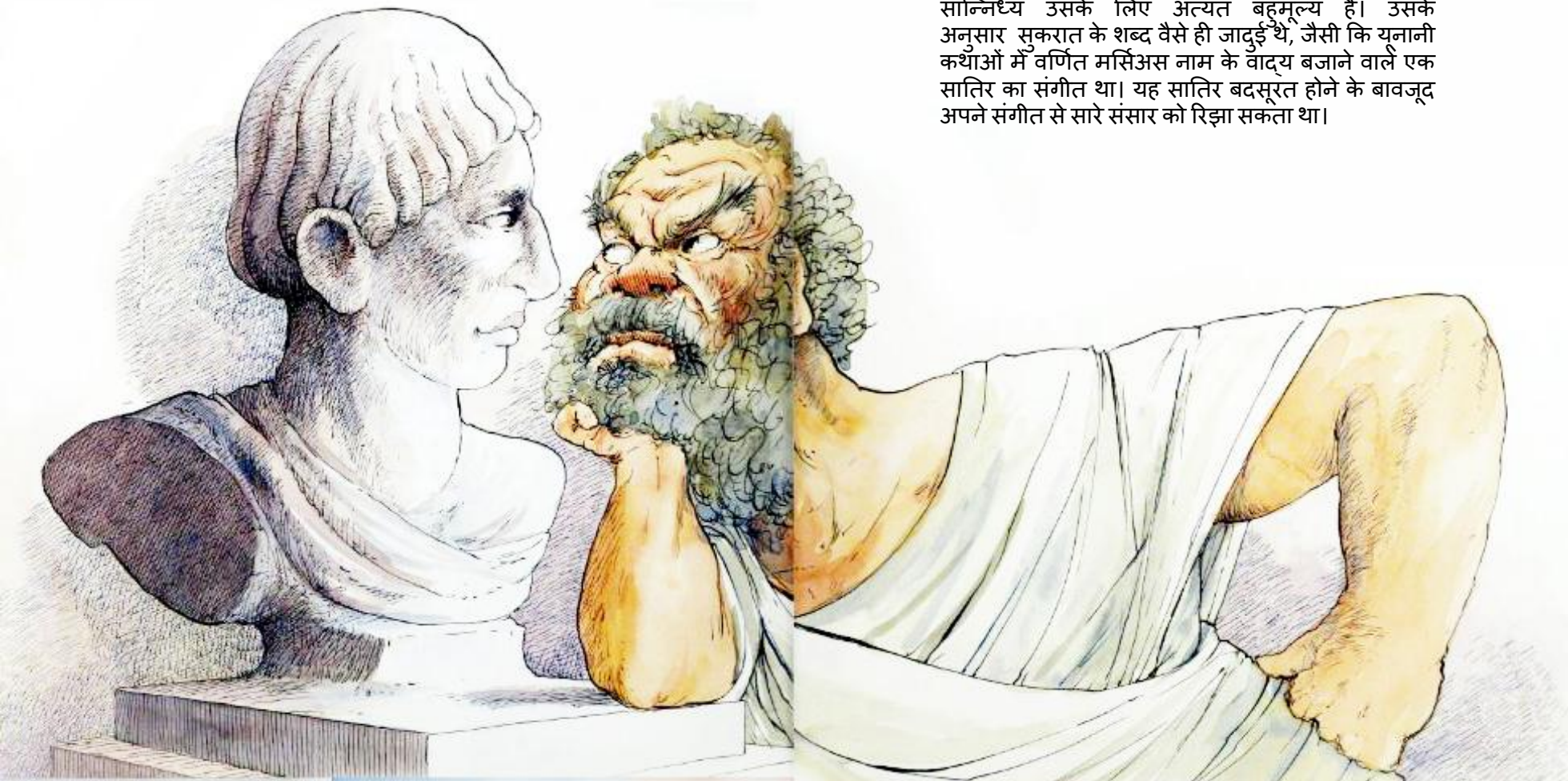

सुकरात निर्धन भी था, लेकिन जो कुछ भी उसके पास था, वह उसमें खुश था।

"देखो इन सब चीज़ों को, जिनकी मुझे ज़रूरत ही नहीं है," वह हंसकर कहता, जब भी वह बाजार में जाता।

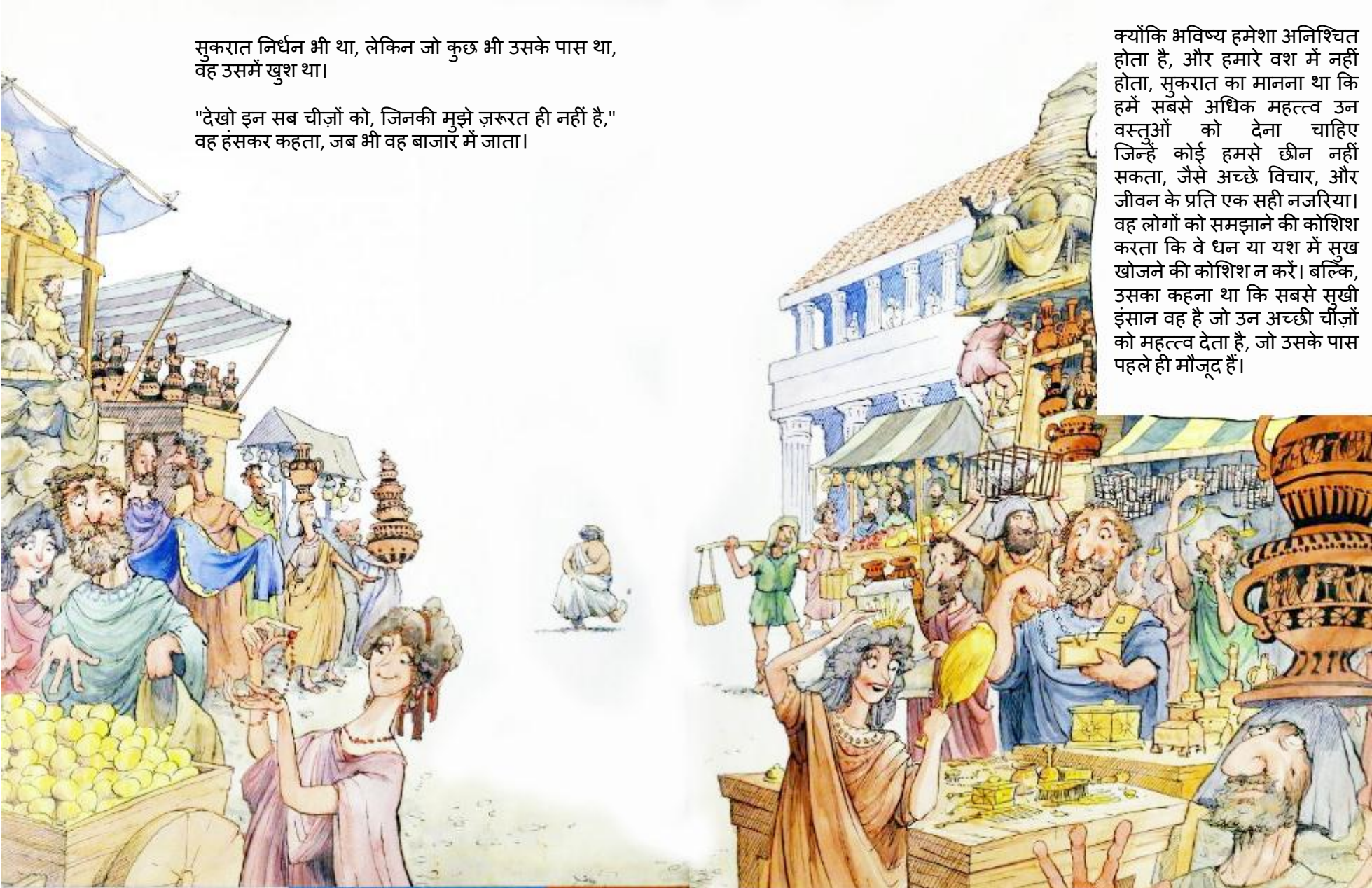

क्योंकि भविष्य हमेशा अनिश्चित होता है, और हमारे वश में नहीं होता, सुकरात का मानना था कि हमें सबसे अधिक महत्त्व उन वस्तुओं को देना चाहिए जिन्हें कोई हमसे छीन नहीं सकता, जैसे अच्छे विचार, और जीवन के प्रति एक सही नजरिया। वह लोगों को समझाने की कोशिश करता कि वे धन या यश में सुख खोजने की कोशिश न करें। बल्कि, उसका कहना था कि सबसे सुखी इंसान वह है जो उन अच्छी चीज़ों को महत्त्व देता है, जो उसके पास पहले ही मौजूद हैं।

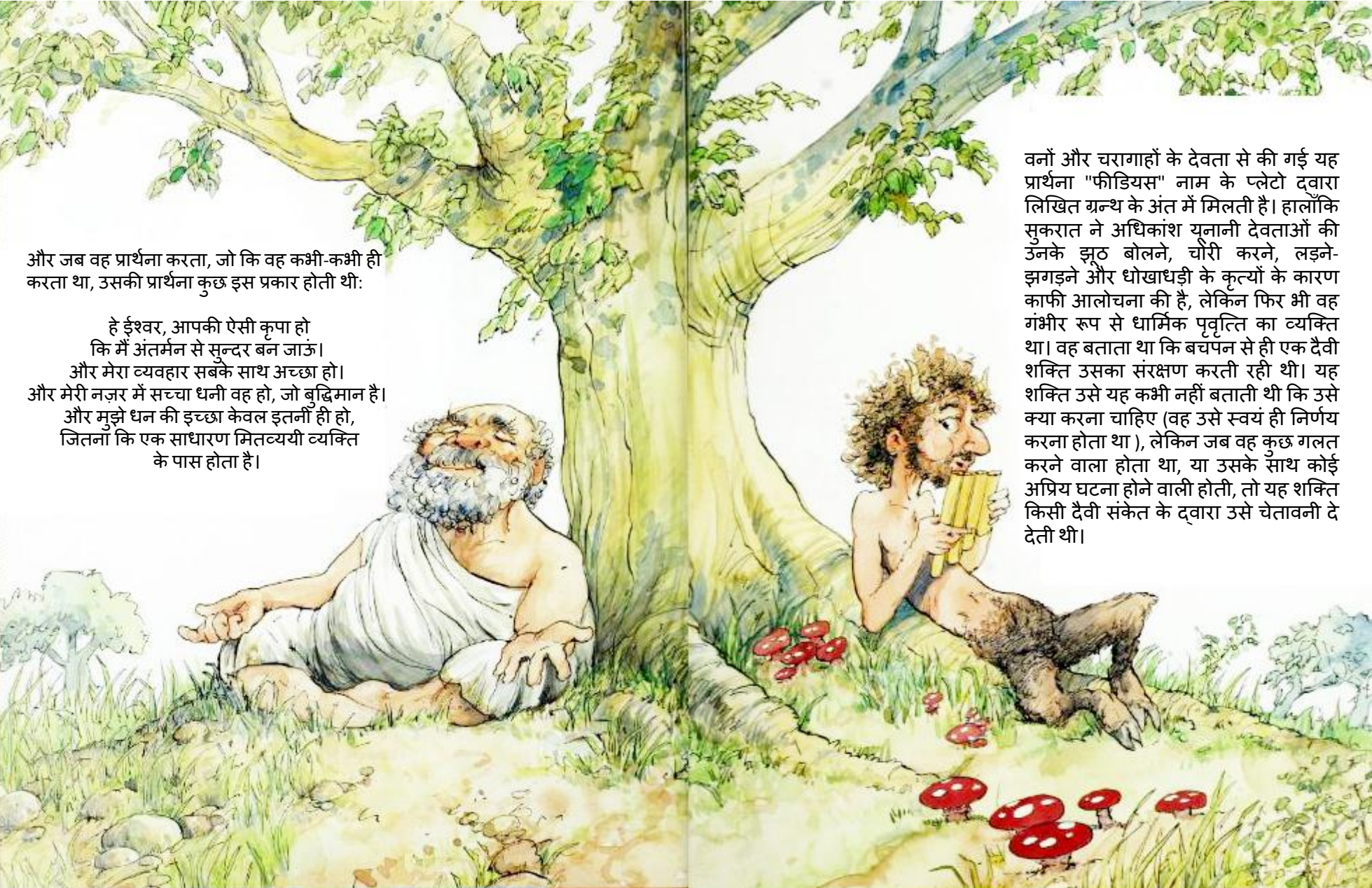

और जब वह प्रार्थना करता, जो कि वह कभी-कभी ही करता था, उसकी प्रार्थना कुछ इस प्रकार होती थी:

हे ईश्वर, आपकी ऐसी कृपा हो
कि मैं अंतर्मन से सुन्दर बन जाऊं।
और मेरा व्यवहार सबके साथ अच्छा हो।
और मेरी नज़र में सच्चा धनी वह हो, जो बुद्धिमान है।
और मुझे धन की इच्छा केवल इतनी ही हो,
जितना कि एक साधारण मितव्ययी व्यक्ति
के पास होता है।

वनों और चरागाहों के देवता से की गई यह प्रार्थना "फीडियस" नाम के प्लेटो द्वारा लिखित ग्रन्थ के अंत में मिलती है। हालाँकि सुकरात ने अधिकांश यूनानी देवताओं की उनके झूठ बोलने, चोरी करने, लड़ने-झगड़ने और धोखाधड़ी के कृत्यों के कारण काफी आलोचना की है, लेकिन फिर भी वह गंभीर रूप से धार्मिक पृवृत्ति का व्यक्ति था। वह बताता था कि बचपन से ही एक दैवी शक्ति उसका संरक्षण करती रही थी। यह शक्ति उसे यह कभी नहीं बताती थी कि उसे क्या करना चाहिए (वह उसे स्वयं ही निर्णय करना होता था), लेकिन जब वह कुछ गलत करने वाला होता था, या उसके साथ कोई अप्रिय घटना होने वाली होती, तो यह शक्ति किसी दैवी संकेत के द्वारा उसे चेतावनी दे देती थी।

बुध्दि के देवता अपोलो को सुकरात से विशेष प्रेम था। "सुकरात जैसा बुद्धिमान, भला और साहसी और कोई नहीं है," अपोलो कहता। और अन्य देवता उससे सहमत थे।

कीरोफोन नाम का सुकरात का एक प्रशंसक मित्र था, जिसे सुकरात के यह कहने पर बड़ा अचरज होता था कि उसे कुछ नहीं आता। कीरोफोन ने डेल्फी नगर को जाकर देवता अपोलो से पूछने का निश्चय किया कि यदि सुकरात नहीं तो भला कौन संसार का सबसे बुद्धिमान व्यक्ति है। वहां अपोलो के मंदिर में पीथिया नाम की एक पुजारन रहती थी जो देवता अपोलो की प्रेरणा से लोगों के प्रश्नों के उत्तर देती थी। कहा जाता है कि उसने कीरोफोन को यह उत्तर दिया था :

सोफोक्लेस बुद्धिमान है, और यूरिपिडेस आधिक बुद्धिमान है, लेकिन बुद्धिमानों में भी सर्वाधिक बुद्धिमान है सुकरात।

सोफोक्लेस और युरिपेडेस दोनों बहुत प्रतिभाशाली और सफल नाटककार थे। दोनों उस समय के यूनान के सबसे प्रसिद्ध काव्यकार थे। जब सुकरात ने अपोलो का यह उत्तर सुना तो उसे लगा कि यदि उसे सबसे बुद्धिमान समझा गया है, तो सिर्फ इसीलिए कि वह अकेला ऐसा इंसान था जिसे पता था कि उसे कुछ नहीं पता। अपोलो के इस उत्तर से उत्साहित हो कर सुकरात अपने दार्शनिक जीवन को एक धार्मिक सेवा के रूप में देखने लगा, विशेषकर इसलिए कि उस समय के अन्य अध्यापकों की तरह उसे इस काम के लिए कोई वेतन नहीं मिलता था। वह अपने साथियों से मज़ाक में कहता कि देवताओं ने उसे उन लोगों के लिए एक ऐसे ततैये की तरह भेजा है जिसके डंक मारते ही एक सोता हुआ घोडा उठ कर पूरे वेग से दौड़ने लगता है।

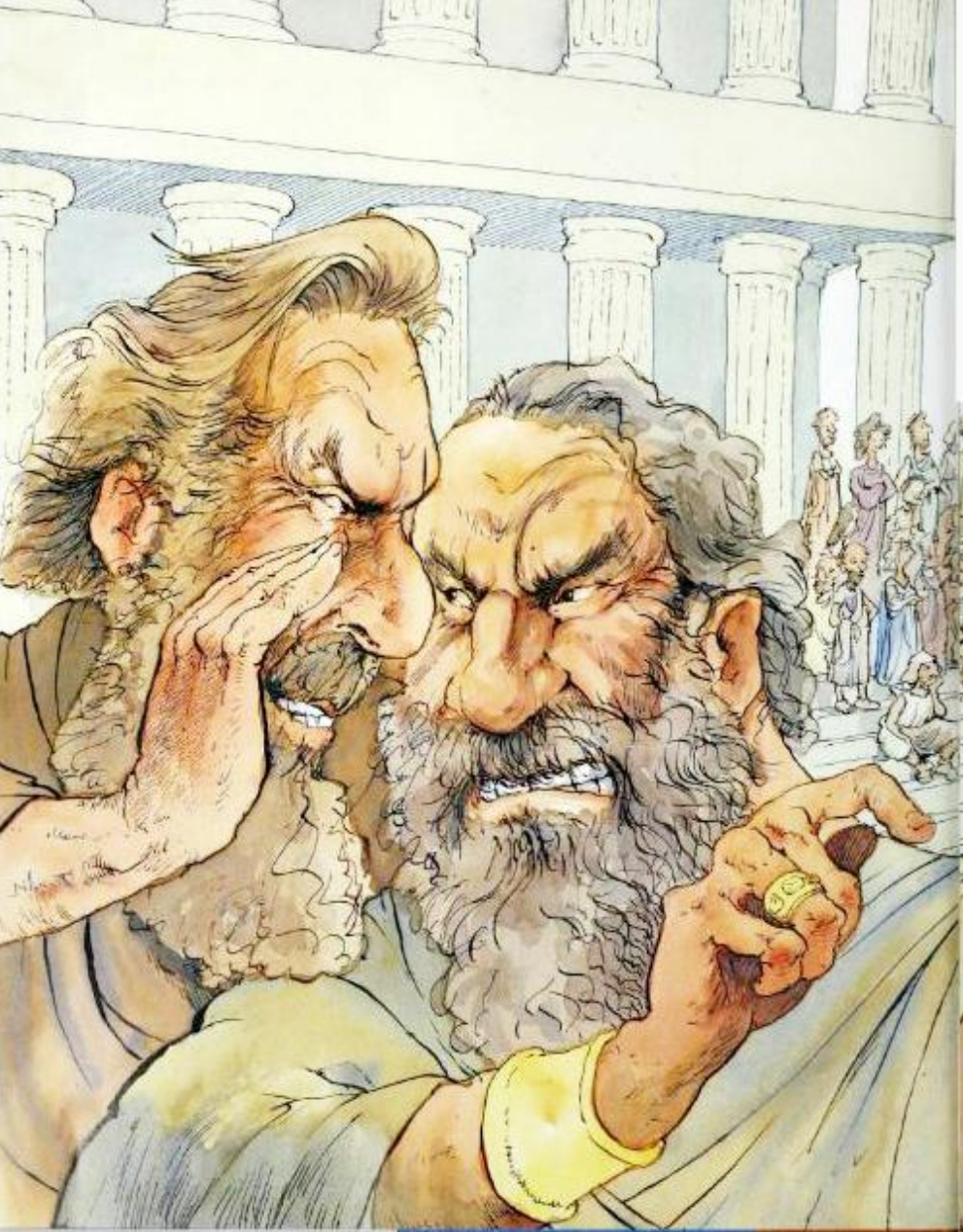

लेकिन कुछ लोग इस बात से अधिक प्रसन्न नहीं हुए। "जो इंसान यह कहता है कि उसे कुछ नहीं पता, वह भला सबसे बुद्धिमान कैसे हो सकता है?" वे बड़बड़ाते।

उन लोगों को अपनी अस्मिता खतरे में दीखने लगी। वे बहुत ईर्ष्यालु और लज्जित महसूस कर रहे थे।
इसलिए वे विचारक सुकरात पर ऐसी बातों का इलज़ाम लगाने लगे जो न उसने कभी की थीं, और न कही थीं। और इस तरह उन्होंने उसे कैदखाने में भिजवा दिया।

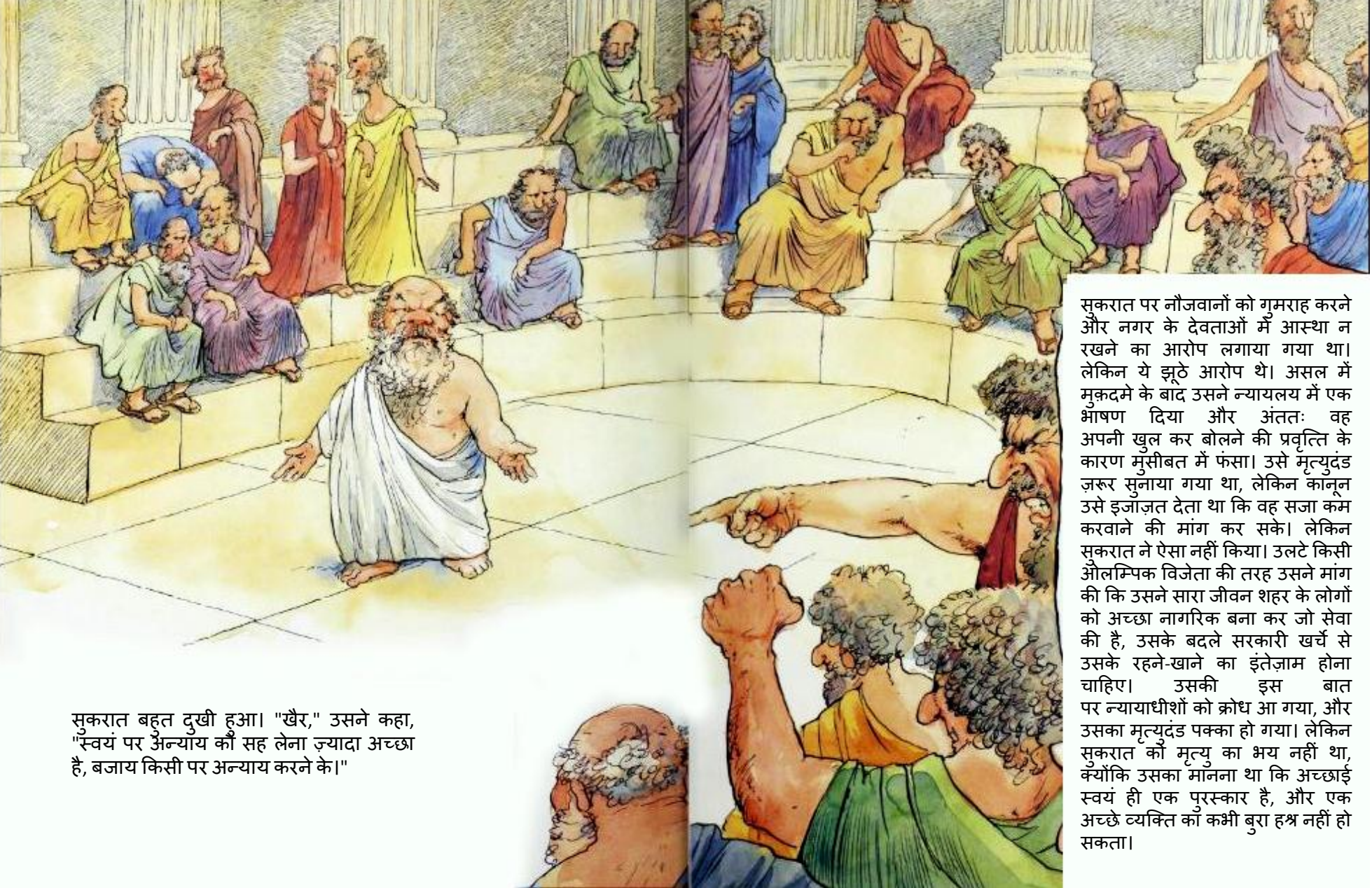

सुकरात बहुत दुखी हुआ। "खैर," उसने कहा, "स्वयं पर अन्याय को सह लेना ज़्यादा अच्छा है, बजाय किसी पर अन्याय करने के।"

सुकरात पर नौजवानों को गुमराह करने और नगर के देवताओं में आस्था न रखने का आरोप लगाया गया था। लेकिन ये झूठे आरोप थे। असल में मुक़दमे के बाद उसने न्यायलय में एक भाषण दिया और अंततः वह अपनी खुल कर बोलने की प्रवृत्ति के कारण मुसीबत में फंसा। उसे मृत्युदंड ज़रूर सुनाया गया था, लेकिन कानून उसे इजाज़त देता था कि वह सजा कम करवाने की मांग कर सके। लेकिन सुकरात ने ऐसा नहीं किया। उलटे किसी ओलम्पिक विजेता की तरह उसने मांग की कि उसने सारा जीवन शहर के लोगों को अच्छा नागरिक बना कर जो सेवा की है, उसके बदले सरकारी खर्चे से उसके रहने-खाने का इंतेज़ाम होना चाहिए। उसकी इस बात पर न्यायाधीशों को क्रोध आ गया, और उसका मृत्युदंड पक्का हो गया। लेकिन सुकरात को मृत्यु का भय नहीं था, क्योंकि उसका मानना था कि अच्छाई स्वयं ही एक पुरस्कार है, और एक अच्छे व्यक्ति को कभी बुरा हश्र नहीं हो सकता।

उसके मित्र प्रतिदिन उससे मिलने कारागृह में आते। वे बातें करते, और नाचते-खेलते रहे, उसके मृत्युदंड के दिन तक भी।

"मित्रों", वह कहता ,"हममें कितनी समानता है ।"

सुकरात को "हेमलॉक" नाम के विष के द्वारा मृत्युदंड दिया गया। लेकिन इसमें काफी देरी हुई, क्योंकि एक पवित्र जहाज़ के "डेलोस" नामक द्वीप से वापस आने तक कोई मृत्युदंड नहीं दिया जा सकता था। इस कारण सुकरात को अपने परिवार और मित्रों के साथ कुछ दिन और गुज़ारने के लिए मिल गए। जेल में रहते हुए भी हमेशा की तरह वह अपना समय दार्शनिक विचारों पर वार्तालाप में बिताता। और इस दौरान उसने अपनी ईसप की कहानियों को संगीतबद्ध भी किया। उसके एक धनवान मित्र क्रीटो ने उसके जेल से भागने का भी प्रबंध किया था, लेकिन सुकरात ने जेल छोड़ने से इंकार कर दिया। उसका कहना था कि जब हम क़ानून व्यवस्था से मिलने वाले अधिकारों का लाभ उठाते हैं,

तो हमें उस कानून द्वारा दिया निर्णय भी स्वीकार करना चाहिए, भले ही वह निर्णय कभी अनुचित भी हो, तब भी। उसने ज़ोर देकर कहा कि यदि निर्णय अनुचित है, तो नागरिकों और शासकों को शांतिपूर्वक कानून में बदलाव करने के लिए राज़ी करना चाहिए। सुकरात अपनी मृत्यु के समय सत्तर वर्ष का था।

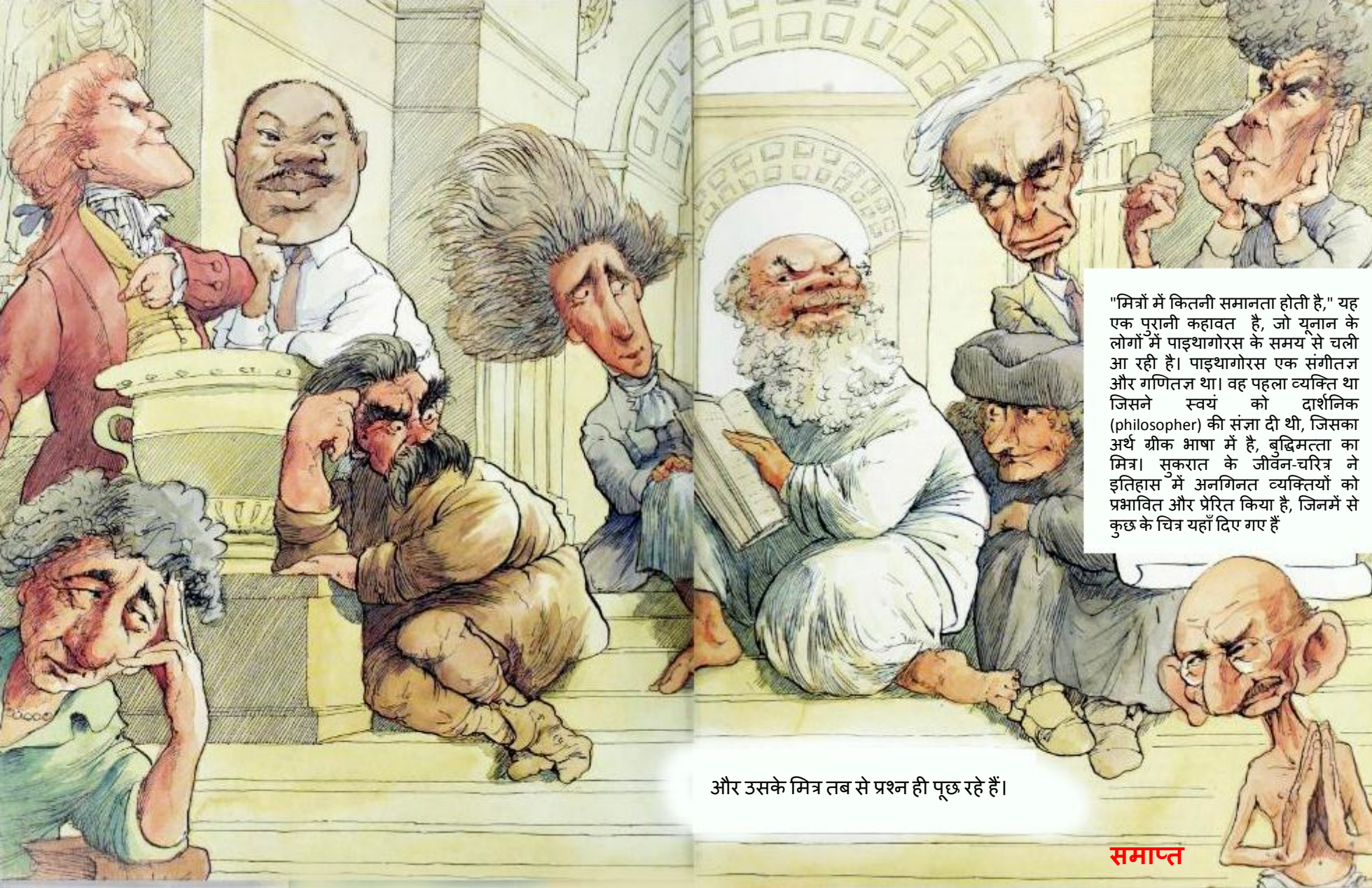

"मित्रों में कितनी समानता होती है," यह एक पुरानी कहावत है, जो यूनान के लोगों में पाइथागोरस के समय से चली आ रही है। पाइथागोरस एक संगीतज्ञ और गणितज्ञ था। वह पहला व्यक्ति था जिसने स्वयं को दार्शनिक (philosopher) की संज्ञा दी थी, जिसका अर्थ ग्रीक भाषा में है, बुद्धिमत्ता का मित्र। सुकरात के जीवन-चरित्र ने इतिहास में अनगिनत व्यक्तियों को प्रभावित और प्रेरित किया है, जिनमें से कुछ के चित्र यहाँ दिए गए हैं

और उसके मित्र तब से प्रश्न ही पूछ रहे हैं।

समाप्त